

मातृभाषा और पढ़ने-लिखने की भाषा का द्वन्द्व

मुकेश मालवीय

पाठ्यपुस्तक के उद्देश्यों को देखते हैं तो बच्चों के साथ स्कूल की भाषा पर काम करना ज़रूरी है। लेकिन भाषा शिक्षण के व्यापक उद्देश्यों के नज़रिए से देखने पर महसूस होता है कि कक्षा की लक्षित भाषा में शिक्षण प्रभावी हो पाए इसके लिए बच्चों की मातृभाषा को कक्षा में पर्याप्त जगह देना भी ज़रूरी महसूस होता है। लेखक पढ़ने, लिखने, विचार करने और सीखने में मातृभाषा की भूमिका की अहमियत पर अपने विचार रखते हैं। वे बताते हैं कि मातृभाषा में विकसित विभिन्न भाषाई क्षमताएँ लक्षित भाषा सीखने में मददगार होती हैं। मातृभाषा में सीखना, मातृभाषा की मदद से सीखना, सीखने को अर्थपूर्ण बनाता है। -सं.

शिक्षा के नए नीतिगत दस्तावेज़ों (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : फ़ाउंडेशनल स्टेज 2022) में बच्चों की मातृभाषा के प्रति बहुत सम्मान ज़ाहिर किया गया है। इसमें बच्चों की मातृभाषा को आधार और माध्यम बनाकर ही शुरुआती शिक्षा और पढ़ना-लिखना सिखाने की बात कही गई है। यह बात नई नहीं है। बच्चों की शिक्षा में उनकी मातृभाषा की अहमियत बहुत पहले पहचानी जा चुकी थी और काफ़ी समय से शुरुआती शिक्षा में इसके इस्तेमाल की वकालत की जाती रही है। क्या अब बच्चों की मातृभाषा प्रारम्भिक शिक्षा में कुछ नई भूमिका में आने वाली है? यह भूमिका क्या होगी? दस्तावेज़ में इस सन्दर्भ में बहुत लुभावनी और सबको पसन्द आने वाली बातें लिखी हैं। मसलन राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : फ़ाउण्डेशनल स्टेज के अध्याय 3 में कुछ ऐसा लिखा है :

भाषा शिक्षा के बारे में एनईपी 2020 पर आधारित एनसीएफ़ के दृष्टिकोण के पीछे के मुख्य सिद्धान्त :

1. बच्चे 0 से 8 वर्ष की उम्र के बीच मौखिक भाषा बहुत तेज़ी से सीखते हैं।

2. बहुभाषिकता में विकसित की जाने वाली मुख्य क्षमताओं में से एक है।

लेकिन इन बातों का क्रियात्मक स्वरूप कैसा हो, इसपर भी हमारे पास आमतौर पर समझ व अनुभव की कमी है। आम शिक्षकीय समझ में प्रारम्भिक स्तर पर भाषा की शिक्षा का मतलब बच्चों को एक भाषा (हिन्दी) की लिपि से परिचित कराना और इसके बाद लिपि से पढ़ने-लिखने का हुनर सिखाना है, और इसमें शुद्ध भाषा पर ज़ोर दिया जाता है। यह समझ है कि पढ़ने की तकनीक सीख जाने के काफ़ी बाद बच्चे उस पढ़े हुए का अर्थ समझने की प्रक्रिया से गुज़रते हैं। यह प्रक्रिया प्रश्न-उत्तर आधारित ही होती है और शिक्षक के बताए अनुसार चलती है। इसमें बच्चे को स्वतः समझने के प्रयास का मौक़ा नहीं होता व यह अपेक्षा नहीं होती कि वह बग़ैर मदद के खुद पढ़कर समझने का प्रयास भी कर सकता है।

पढ़ना व भाषा सीखने के प्रयास

आगे इसमें भाषा के विन्यास (व्याकरण) की जानकारीयाँ आ जाती हैं जिनमें परिभाषाओं को



फोटो : मुकेश मालवीय

याद कराने में ऊर्जा लगती है। बच्चों को शुद्ध और सही भाषा सिखाने के लिए पाठ्यपुस्तक ही एकमात्र सहारा मानी जाती है।

ऐसी परिस्थितियों में बच्चे की मातृभाषा की क्या भूमिका हम देख पाएँगे? यहाँ बच्चे की सोच की, उसके प्रयास व अनुभव की कोई जगह ही नहीं है। ज़रूरी यह है कि भाषा शिक्षा में मौखिक भाषा में संवाद की प्रक्रिया पहले अपना स्थान बनाए, तब ही यह सुझाव या बहस हो सकती है कि यह संवाद बच्चों की घर की भाषा में होगा या स्कूल की भाषा में।

बच्चे की घर की भाषा और स्कूल की भाषा में मेलजोल कैसे हो सकता है, इसके कुछ अनुभव मेरे पास हैं। मैं बीस से अधिक वर्षों तक आदिवासी गोण्ड जनजाति के बच्चों के साथ एक सरकारी स्कूल में प्रारम्भिक शिक्षा की सीखने-सिखाने की गतिविधियों में संलग्न रहा हूँ। सरकारी स्कूल के शिक्षक की भूमिका में मुझे इन वर्षों में भाषा शिक्षण की एक अप्रोच को समझने का मौका मिला। यह अप्रोच परम्परागत भाषा शिक्षण से थोड़ी अलग और प्रगतिशील थी। इस अप्रोच से सम्बन्धित शिक्षण के अनुभव भाषा

की समझ के जानकार प्रो रमाकांत अग्निहोत्री के साथ मेरे स्कूल में चल रहे एक नवाचार कार्यक्रम 'प्राशिका' के दौरान मुझे हो रहे थे।

इस कार्यक्रम के दौरान जो शिक्षक प्रशिक्षण हुए, उनमें हमने भाषा को बरतने, जानने और बच्चों के साथ इसे लिखित और मौखिक रूप में सहजता (जैसे बोलचाल में आ रहा है वैसे ही) के साथ इस्तेमाल करने की समझ को आत्मसात किया। इस दौरान भाषा की समझ को लेकर हम थोड़ा ज़्यादा उदार बन पाए। हमने भाषा को इस तरह से भी जाना कि भाषा मूल रूप से मौखिक स्वरूप में होती है, और इस रूप में हमेशा अपने आसपास की भाषा के शब्दों को अपने में समाहित कर लेती है। यह बेहद स्वाभाविक प्रक्रिया है और इससे कोई भाषा अशुद्ध नहीं होती। अगर दो बच्चों या बड़ों के पास अलग-अलग भाषाएँ हैं और उनके पास इस तरह की परिस्थिति या आवश्यकता निर्मित हुई कि उन्हें एक दूसरे को अपनी बात समझानी है, तब वे एक दूसरे को अपनी-अपनी बात भाषा के ज़रिए समझा पाते हैं। स्कूल में भी दो अलग-अलग भाषा बोलने वाले बच्चों के बीच संवाद

होता है, परन्तु शिक्षक और बच्चों के बीच एक दूसरे की भाषा का अजनबीपन पहाड़ बनकर खड़ा हो जाता है। इसके एक तरफ़ बच्चे होते हैं और दूसरी तरफ़ शिक्षक व पाठ्यपुस्तकें। इस अजनबीपन में दोस्ती का हाथ कौन बढ़ाएगा?

उन दिनों मैंने भाषा के बारे में यह भी समझा कि बच्चे और बड़े अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा का इस्तेमाल करते हैं। लेकिन विचार, भाषा के ज़रिए केवल व्यक्त ही नहीं होते, बल्कि भाषा से बनते भी हैं। इसलिए जो व्यक्ति जितना अधिक किसी भाषा का सक्रिय इस्तेमाल सुनने, बोलने, पढ़ने, व लिखने में करता है, उसका भाषाई कौशल उतना अधिक विकसित होता जाता है।

मेरे स्कूल के सन्दर्भ में, बच्चों के लिए 'स्कूल' वह जगह थी जहाँ उनके शिक्षक के पास और पाठ्यपुस्तक में एक अलग भाषा थी पर यह अपरिचित नहीं थी। यह भाषा बच्चे को स्कूल आने के पहले भी कभी-कभी बाज़ार में या अन्य लोगों से सुनने को मिलती रही थी। स्कूल में भी उनके कुछ साथी इस भाषा से थोड़े परिचित थे। मैंने समझा कि ऐसे बच्चे जो अपने घर-पड़ोस में एक अलग भाषा बोलते हैं, वे स्कूल की पढ़ने-लिखने की भाषा को अपनी समझ या विचार के स्तर पर लाने के लिए उससे लगातार जूझते हैं और जल्द ही उस भाषा के ढाँचे को पकड़ लेते हैं। बशर्ते कोई उन्हें इस भाषा का इस्तेमाल करने की वैसी ही आज्ञादी दे, जैसी कि उन्हें मातृभाषा सीखते समय मिली थी। तब अपनी बात को कहने की ज़रूरतों के लिए भाषा प्रयोग करना उन्होंने सीखा था। उन्हें इस स्कूली भाषा के इस्तेमाल की भी वास्तविक ज़रूरत महसूस होना ज़रूरी है। स्कूल की भाषा जितनी सघनता में उन्हें देखने-सुनने और इस्तेमाल करने के

मौक़े देती है, उतनी ही जल्दी यह बच्चों के लिए आधिकारिक और सहज हो जाती है। मैंने यह भी समझा कि भाषा पर बच्चों का अधिकार और आत्मविश्वास प्राथमिक शिक्षा का सबसे अधिक महत्वपूर्ण पहलू है। यह मानकर, कि बच्चों के पास भाषा इस्तेमाल करने का नैसर्गिक कौशल है, मैंने अपने स्कूल में मौखिक भाषा के इस्तेमाल की कई सारी गतिविधियाँ बनाईं।

पर ज़्यादातर स्कूल बच्चों के लिए ऐसे मौक़े नहीं बना पाते जहाँ बच्चे भाषा इस्तेमाल करने के अपने नैसर्गिक कौशल को बेहतर कर पाएँ। स्कूल में बच्चों के लिए शिक्षक के साथ वार्तालाप केवल शिक्षक के प्रश्नों के 'हाँ' या 'नहीं' में जवाब देने या एक-आध वाक्य तक ही सीमित होता है। बच्चों की समझ और कल्पनाओं की अभिव्यक्ति



फ़ोटो : मुकेश मालवीय

उत्पन्न करने वाले ऐसे वार्तालाप, जिनमें बच्चों के अपने अनुभव व्यक्त हों, बहुत कम ही होते हैं।

बच्चा जो भाषा घर-परिवार से सीखकर आता है, उस भाषा के प्रयोग की, अभिव्यक्ति की माँग स्कूल में किया जाना निहायत ज़रूरी है। यही घरेलू भाषा, किताबी भाषा को समझने और बोलने में एक सेतु, सहारा और ज़रिया बनाती है, क्योंकि किसी भी एक भाषा को जानने वाले में दूसरी

भाषा के ढाँचे को पकड़ लेने का गुण मौजूद होता ही है। मैं अपनी बात को एक बार फिर दोहराता हूँ कि किसी भी एक भाषा को जानने वाले के पास किसी दूसरी भाषा के कहने के ढाँचों को सहज ही समझ लेने का और थोड़े प्रयास से ही उन ढाँचों को इस्तेमाल करने का साहस आ जाता है। हाँ, उस नई भाषा के शब्द जरूर धीरे-धीरे आएँगे, पर ढाँचा जल्दी पकड़ने आता है।

इस बात के समर्थन में हम गोण्डी भाषा के कुछ वाक्यों को लेकर इसके नियमों को समझने की कोशिश करते हैं। जैसे—

ट्यूडा कलेवा तित्तोना। (लड़का खाना खाता है।)

ट्यूडी कलेवा तित्तोना। (लड़की खाना खाती है।)

इन वाक्यों को मैं हिन्दी में समझकर कुछ नए वाक्य आवश्यकता अनुसार बोल सकता हूँ।

जैसे— राम कलेवा तित्तोना या मीना खाना तित्तोना। ट्यूडा मध्याह्न भोजन तित्तोना।

अगर बोलचाल के प्रयास से मैं गोण्डी के कुछ वाक्य, ढाँचे और शब्द समझ लेता हूँ तो मैं

हिन्दी मिश्रित ढाँचे और शब्दों के जरिए अपनी अभिव्यक्ति कर पाऊँगा।

दूसरी ओर, मुझे अगर इस वहम को तोड़ना है कि गोण्डी भाषा पिछड़ी, अशुद्ध और गरीब है क्योंकि इस भाषा की लिपि और व्याकरण नहीं है, तो मैं इन तीन-चार वाक्यों के विश्लेषण से अपना मत बदल सकता हूँ।

राम कलेवा तित्तोडा। (राम खाना खाता है।)

राम कलेवा तित्तोर। (राम ने खाना खाया।)

अन्ना नेंदे हंतोना। (मैं खेत जा रहा हूँ।)

अन्ना नेंदे हनजी। (मैं खेत गया था।)

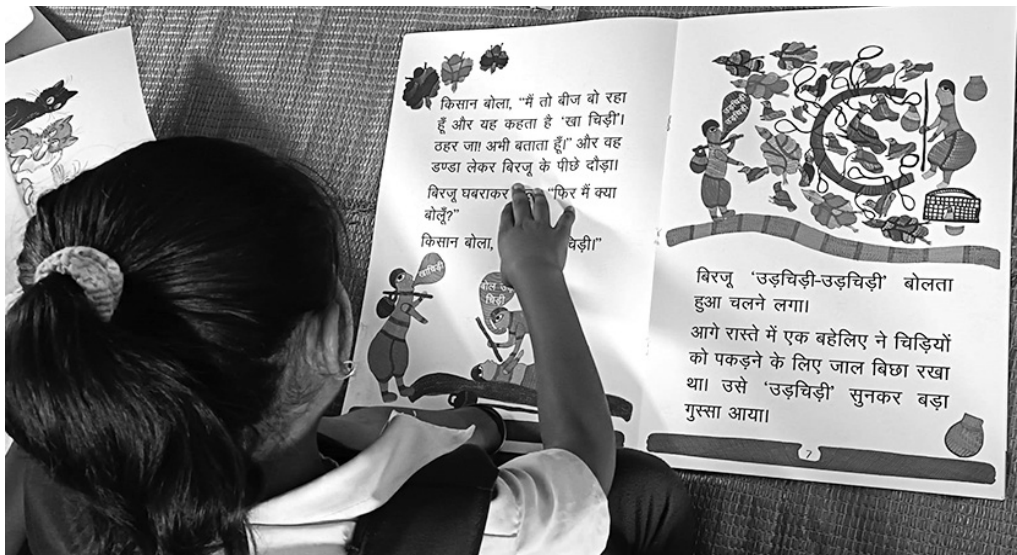
अन्ना नेंदे हंदाका। (मैं खेत जाऊँगा।)

अम्मा नेंदे हनतोड़ान। (हम खेत जा रहे हैं।)

बोड़ नेंदे हनतोड़? (कौन खेत जा रहा है?)

हम देख और सुन सकते हैं कि यह भाषा भी उसी तरह नियमों का पालन कर रही है जैसे कोई दूसरी भाषा या हिन्दी करती है।

ऐसे बच्चे, जिनके पास पहले से एक भाषा मौजूद है, दूसरी भाषा को बोलते हुए थोड़ी अतिरिक्त सतर्कता बरतते हैं, जिसमें गलती



चित्र : हिमांशु खोले

करने का डर बना रहता है। जब तक यह भरोसा न बने कि सुनने वाले को उसकी बात की ज़रूरत है और उसका बोलना आवश्यक है, साथ ही उसका मज़ाक़ नहीं बनेगा, तब तक उसकी हिचकिचाहट उसकी अभिव्यक्ति को रोकती रहेगी।

प्रारम्भिक भाषा का पाठ्यक्रम क्या इस तरह की माँग करता है ?

भाषा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपयोग जो हम करते हैं, वह है अपने आसपास की दुनिया को एक अर्थ देना, या समझना। अपने अनुभवों को व्यवस्थित करने और उनकी व्याख्या करने, चिन्तन करने, निर्णय लेने, विचार को समझने, विचार या अवधारणाएँ बनाने आदि के लिए भाषा एक आवश्यक शर्त है। साथ ही भाषा विचार की क्षमता व कुछ दक्षताओं, जैसे स्मृति व उसका नियंत्रित उपयोग, कल्पना, तर्क, सम्बन्ध-बोध, कार्य-कारण सम्बन्ध-बोध आदि पर भी निर्भर करती है। ये सब क्षमताएँ या दक्षताएँ हर तरह की भाषा के विकास की जड़ में होती हैं। इनके बिना भाषा का विकास असम्भव है। ये क्षमताएँ भाषाई क्षमताओं पर निर्भर भी हैं। बिना भाषा के इनमें विकास भी सम्भव नहीं। यानी समझ, भाषा पर निर्भर है और भाषा, समझ पर। एक के बिना दूसरी सम्भव नहीं। हर स्तर पर ये दोनों क्षमताएँ एक दूसरे का सहारा बनते हुए, एक दूसरे को सहारा देते हुए आगे बढ़ती रहती हैं। इस समझ को अपनाने से मेरे लिए बच्चों के साथ स्कूल में मौखिक भाषा पर काम करना बहुत ज़रूरी बन पाया।

सुनकर समझना क्या है ?

एकलव्य के प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम में पाठ्यक्रम का एक बुनियादी कौशल था— सुनकर समझना और बोलकर अभिव्यक्त करना। इनमें पहला कौशल, सुनकर समझना क्या है? हमारे आसपास सुनकर समझने के लिए बहुत कुछ होता है। बातचीत, आदेश, निर्देश, विनती,



चित्र : हिमांशु खोले

कहानी, कविता, गीत, नाटक, संवाद आदि के साथ ही विचार, भावनाएँ, प्रयोजन इत्यादि भी। यह सब हम (बच्चे भी) अपने आसपास सुनते हैं, पर इन्हें समझते कैसे हैं?

हमें समझ में आने का मतलब है कि हमने अपना अर्थ उन शब्दों में डाल दिया जो हमने सुने थे। तभी हम कहेंगे कि कही गई बात हमारी समझ में आ गई। इसमें सुनने वाले की चेतना और कोशिश का बड़ा महत्व है। यदि सुनने वाला किसी वजह से डरकर खुद को अर्थ बनाने की प्रक्रिया से रोक रहा है तो उसे समझ नहीं आएगा या अर्थ ग्रहण करना बाधित होगा। यह भी कहा जा सकता है कि सुनना हमारा एक अनुभव तो है ही, यह मौखिक भाषा का बड़ा और अनिवार्य पहलू भी है। दूसरे, इसमें अन्य लोगों के अनुभव तक हमारी पहुँच बनती है।

मौखिक भाषा का उपयोग हम बोलकर अभिव्यक्त करने में करते हैं। अपने अनुभवों को समझ पाना, बोलकर अभिव्यक्त करने की आवश्यक तार्किक शर्त है। बोलकर अभिव्यक्त करना हमारी भाषा व समझ को निरन्तर परिष्कृत करते रहने का तरीका भी है। स्कूल में सुनियोजित तरीके से बच्चों की अभिव्यक्ति की

माँग बनाना भाषा की कक्षा की अनिवार्य ज़रूरत होनी चाहिए।

इस तरह हम पाते हैं कि भाषा के उपरोक्त उपयोग के लिए कुछ विशुद्ध भाषाई क्षमताएँ आवश्यक हैं—

1. ध्वनि इकाइयों (शब्द) को पहचानना, उच्चारित कर पाना;
2. शब्द सामर्थ्य;
3. वाक्य संरचना का ज्ञान (इस्तेमाल से स्वतः आ जाने वाला); और
4. ध्वनि के उतार-चढ़ाव का बोध (इस्तेमाल से स्वतः आ जाने वाला)।

दूसरी क्षमताएँ, जैसे—

1. स्मृति व उसका नियंत्रित उपयोग;
2. कल्पना;
3. सम्बन्ध-बोध और कार्य-कारण सम्बन्ध-बोध;
4. तर्क; आदि।

कोई भी बच्चा जब शाला आता है तो उसमें ये सभी क्षमताएँ कुछ हद तक विकसित होती ही हैं। वह अपनी स्थानीय बोली समझता है और बोलता है। उसे स्कूल की भाषा (हिन्दी) के विकास के लिए मूल क्षमताएँ तो वही चाहिए, जो उसने अपनी मातृभाषा के लिए अर्जित कर रखी

हैं। अतः बच्चों की उपरोक्त अर्जित क्षमताओं को आधार बनाकर शाला में हमने कुछ गतिविधियाँ कीं, जो उनके लिए हिन्दी भाषा सीखने में अत्यधिक सहायक बनीं। मसलन,

1. खेल खेलना जिसमें सहज ही भाषा का इस्तेमाल करना पड़ता है;
2. कहानी सुनना-सुनाना और कहानी पर बातचीत करना;
3. कविता, गीत;
4. वर्णन (घटना, वस्तु, परिस्थिति आदि का);
5. सहचिन्तन, चर्चा और बहस, आदि।

इन गतिविधियों को करते हुए मैंने उन संवेदनाओं और समझ का भरपूर उपयोग किया जो भाषा को केवल विषय न मानकर एक दूसरे को समझने का एक नया रिश्ता मानती हैं।

ऐसी बहुत-सी गतिविधियों का वर्णन किया जा सकता है जिनमें ये सारे बिन्दु विस्तार से दिखाए जाएँ। इस तरह की सैकड़ों गतिविधियाँ हैं। लेकिन मुझे लगता है कि इन गतिविधियों के पीछे निहित विचार पर चर्चा करना और उसकी समझ बनाना शिक्षकों के लिए अधिक ज़रूरी है। इस लेख में यही करने का प्रयास किया गया है।

सन्दर्भ

1. भाषा, रोहित धनकर
2. एकलव्य प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम
3. भाषा व ज्ञान, नोम चोम्स्की
4. पढ़ना, ज़रा सोचना, कृष्ण कुमार
5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
6. राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा : फ़ाउंडेशनल स्टेज 2022

मुकेश मालवीय पिछले दो दशक से भी ज्यादा समय से स्रोत शिक्षक के रूप में सरकारी और गैर-सरकारी भूमिकाओं में सक्रिय हैं। कक्षा अनुभवों को लेकर सतत लिखते रहते हैं। वर्तमान में अनुसूचित जाति विकास विभाग के शासकीय आवासीय ज्ञानोदय विद्यालय, होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) में शिक्षक पद पर कार्यरत हैं।

सम्पर्क : mukeshmalviya15@gmail.com